संपादकीय

पहाड़ों की चुप्पी में शब्दों की गूँज...

कंचनजंघा पत्रिका का यह अंक पूर्वोत्तर भारत के आठ राज्यों पर केंद्रित एक महत्त्वाकांक्षी और बहुप्रतीक्षित सांस्कृतिक परियोजना का प्रस्थान बिंदु है, जिसकी शुरुआत हम अरुणाचल प्रदेश से कर रहे हैं। इस यात्रा का उद्देश्य पूर्वोत्तर भारत की बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक और बहुआयामी साहित्यिक परंपराओं से संवाद स्थापित करते हुए इसे संरक्षित करना है। इस अर्थ में, कंचनजंघा का यह अंक न केवल अरुणाचल प्रदेश के साहित्यिक और सांस्कृतिक वैभव का दस्तावेज़ है, बल्कि यह हिंदी साहित्य की विस्तारशीलता और आत्मीयता का भी प्रमाण है।

कंचनजंघा के इस अंक के माध्यम से हम एक बड़े संकल्प की ओर आगे बढ़ रहे हैं। यह अंक एक दीर्घकालिक साहित्यिक परियोजना का पहला पड़ाव है, जिसका उद्देश्य पूर्वोत्तर भारत के आठों राज्यों के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिदृश्य को स्वतंत्र रूप से विशेषांक के रूप में प्रकाशित करना है। अरुणाचल प्रदेश अंक इसका प्रथम सोपान है।

अरुणाचल प्रदेश पर केंद्रित यह अंक उन सभी रचनाकारों, शोधकर्ताओं, अनुवादकों और स्थानीय लेखकों की साझी मेहनत और संवेदना का परिणाम है, जिन्होंने इस परियोजना को केवल एक अकादमिक दस्तावेज़ नहीं, बल्कि एक आत्मीय एवं परस्पर संवाद में बदल दिया है। कंचनजंघा पत्रिका का यह विशेषांक अरुणाचल प्रदेश की लोक संस्कृति, भाषिक विविधता, साहित्यिक परंपरा, स्त्री-बोध एवं आदिवासी जीवन-दर्शन को समग्रता में समेटने का एक विनम्र प्रयास है। निश्चित रूप से आदिवासी लोकगीतों, कथाओं और कहावतों के माध्यम से अरुणाचल प्रदेश की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक जमीन को समझने की एक सतत जिज्ञासा इसमें परिलक्षित होती है।

यह अंक ऐसे अनुभवों की सह-यात्रा है, जिसमें अरुणाचल की घाटियों, उत्सवों, भाषाओं और लोक विश्वासों से संवाद स्थापित करने का प्रयास किया गया है। स्थानीय लेखकों की सहभागिता इस विशेषांक की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। अरुणाचल प्रदेश के स्थानीय लेखकों और युवा रचनाकारों की सशक्त उपस्थिति ने इस अंक को और अधिक प्रामाणिक बना दिया है। निश्चित रूप से इस भागीदारी ने अंक में शामिल विषयवस्तु को विश्वसनीयता प्रदान की है। अंक में शामिल स्थानीय भाषाओं से हिंदी में अनूदित रचनाएं न केवल भाषायी सेतु का निर्माण करती हैं, बल्कि पाठक को भाषाओं के भीतर की अनुभूतियों से भी जोड़ती हैं। यह अंक पूर्वोत्तर भारत के साथ शेष भारत का समन्वय और स्थायी संवाद

की नींव स्थापित करने की एक कोशिश है। हमें उम्मीद है कि निकट भविष्य में यह संवाद महज रचनात्मक न होकर सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी सार्थक सिद्ध होगा।

मैं कंचनजंघा पत्रिका के इस विशेषांक के अतिथि संपादक डॉ. राजीव रंजन प्रसाद की प्रतिबद्धता और उनकी संवेदनशील दृष्टि की सराहना करता हूँ, जिन्होंने इस अंक के माध्यम से अरुणाचल प्रदेश के उन अनछुए पहलुओं से हमें परिचित कराया है, जिनसे अधिकांश पाठक समूह अनभिज्ञ है। हमें विश्वास है कि यह अंक न केवल अरुणाचल को समझने में सहायक होगा, बल्कि हिंदी पाठक को अपनी भाषा में एक नए भूगोल और संस्कृति से जोड़ने का सशक्त माध्यम भी बनेगा।

अतिथि संपादक के रूप में डॉ. राजीव रंजन की भूमिका केवल संपादकीय जिम्मेदारी तक सीमित नहीं रही, बल्कि उन्होंने इस अंक को एक जीवंत सांस्कृतिक परियोजना के रूप में जिया। उनका संपादन किसी औपचारिक प्रक्रिया का निर्वहन नहीं, बल्कि एक सघन रचनात्मक और मानवीय प्रक्रिया का विस्तार रहा, जिसमें वे स्वयं एक माध्यम बनकर अरुणाचल की विविध भाषाओं, लोकधाराओं और साहित्यिक स्वरूपों को हिंदी जगत से जोड़ने के लिए सतत प्रतिबद्ध रहे। उनकी प्रतिबद्धता का प्रमाण इस अंक की विषयवस्तु की गहराई और विविधता में स्पष्ट परिलक्षित होता है। निश्चित रूप से राजीव रंजन ने संपादन के स्तर पर इस अंक को यथासंभव सहज और प्रमाणिक स्वरूप देने का प्रयास किया है। कंचनजंघा पत्रिका समूह की ओर से डॉ. राजीव रंजन प्रसाद के इस समर्पण और गहरे संपादकीय विवेक के साथ अंक के संपादन हेतु हार्दिक बधाई और साधुवाद।

यह विशेषांक हम उन सभी पाठकों को समर्पित करते हैं, जिनके भीतर अरुणाचल प्रदेश को जानने की जिज्ञासा और सह-यात्रा करने का भाव जीवित है। हमारी आकांक्षा है कि यह अंक पाठकों के भीतर पूर्वोत्तर भारत के प्रति एक नया भाव जगत रचे, एक ऐसी आत्मीयता उत्पन्न करे, जो केवल पठन तक सीमित न रहे, बल्कि समझ, संवाद और सहभागिता तक पहुँचे। कंचनजंघा परिवार की ओर से यह अंक सभी सुधी पाठकों को सादर समर्पित है- सप्रेम, सह-भाव और संकल्प के साथ।

(प्रदीप त्रिपाठी)